अध्याय द्वितीय

-- अवतार --

(मराल छंद)

क्षीरनिधिजातमसृण[1] नवनीत[2]
विनिर्मित है क्या वपु यह नव्य[3] ।
सुभगता का ही क्या अवतार
भूमि पर हुआ भूरिष:[4] भव्य ॥1॥

भुलाती पलकों की गति आशु
कान्ति निर्झरिणी सी यह देह ।
नहीं वसुधा की है यह सुधा
धरणिजा[5] नहीं विगत संदेह ॥2॥

शरद पूनम सी आभा शीत
शरद[6] सी होती किंतु प्रतीत ।
पुलकयुत मन फिर मोदाविष्ट
गान को उत्सुक सा नवगीत ॥3॥

उर्मि सी चंचल मानो त्वरा
इरा[7] पर करती हो संचार ।
पुलक भरने को भव[8] में स्फूर्ति
अलसता का करने परिहार ॥4॥

पवन भी पावन हो वह रहा
मात्र छूकर इसकी तनुयष्टि ।
समुज्जवल हो जाता परिदृश्य
डालती जिस आशा[9] में दृष्टि ॥5॥

तपस्या की मानो हो सिद्धि
सप्तऋषि आश्रमजात सुगंध ।
स्वयं वनश्री धर रमणी रूप
विचरती वन में है स्वच्छंद ॥6॥

1. कोमल	4. बहुत अधिक, प्रचुर	7. पृथ्वी
2. मक्खन	5. पृथ्वी	8. संसार
3. नवीन	6. बाण देने वाली	9. दिशा

घनीभूता ज्यों म्रदिमा[1] हुई
अमल अति पुंडरीक[2] की कांति ।
क्षीरनिधिफेनज[3] ज्यों परिधान
शुभ्रहिम की देते हैं भ्रांति ॥7॥

अलक[4] ज्यों प्रावृट[5] की घनघटा
घटाते अमा निशा का मान ।
कम्बु[6] सम ग्रीवा, आनन अरूण
तरूण वारिज का है उपमान ॥8॥

अमल आभा का निर्झर भव्य
डूबती उतराती है दृष्टि ।
तुहिनकर कर ज्यों पुंजीभूत
चित्त पर करती अमृत वृष्टि ॥9॥

न रति सी है यह रमणी रम्य
न मादक है अप्सरा समान ।
ताप हरने को जग का स्यात
मृदुलता का यह विधि वरदान ॥10॥

तरलता और सरलता यहॉ
परम यह शीतलता अभिनंद्य ।
कर रहीं युगपद यहॉ निवास
प्रवणता पावनता जगवंद्य ॥11॥

अनामय हो जाता है चित्ता
लीन होते हैं मनोविकार ।
घेर लेता बस विस्मय बुद्धि
डूबते हैं सब तुच्छ विचार ॥12॥

देख विस्मित नृप को इस भांति
सुवदना बोली हो गंभीर ।
अनागस भूतों के असुहार
विजन में भटक रहे क्यों वीर ॥13॥

1. मृदुता	2. श्वेतकमल	3. दुग्ध का सागर
4. केश	5. वर्षा ऋतु	6. शंख

बाणधारी वन-वन फिर रहा
धर्म जिसका है बस परित्राण ।
बढे जिसको विलोक विष्वास
वही है क्षत्र[1] न कृंतक[2] प्राण ॥14॥

हुए क्षण को शांतनु हतकान्ति[3],
पुन: बोले भद्रे यह सत्य ।
शास्त्र अनुमत या विहित अशेष,
नहीं है नरपतियों के कृत्य ॥15॥

सौम्य पशुगण का क्रूराखेट,
विविध व्यसनों में होता गण्य ।
मारता मैं बस हिंसक सत्व[4],
अत: मम कार्य देवि ब्रह्मण्य[5] ॥16॥

चमत्कृत क्यों होते हो वीर,
देखकर तेजोमय अस्तित्व ।
धरा पर कुछ भी नहीं अदिव्य,
एक स्त्रोतोत्थित सारे सत्व ॥17॥

रखोगे यदि बस भौतिक दृष्टि,
मिलेंगे पग-पग यहां रहस्य ।
भ्रमण करता है आकुल जीव,
नियति का होकर संतत वश्य ॥18॥

वायु से बन जाती है अग्नि,
अनल से होता जल उद्भूत ।
नहीं क्या ये रहस्य अतिगूढ़,
वारि से धरणी हुई प्रसूत ॥19॥

1. क्षत्रिय	2. काटने वाला	3. न्यून तेज , आभाहीन	4. प्राणी	5. पवित्र

चकित थे देख तरूणि का ज्ञान,
प्रगल्भा गिरा अर्थ से पूर्ण ।
विलक्षण प्रत्युत्पन्नमतित्व
तरलता थी दृढ़ता परिपूर्ण ॥20॥

प्रकृति से ही कर[1] ग्राही भूप,
रूपसी बोली देख सहास ।
लगी अभिलाषा होती पूर्ण,
छा गया मन में दिव्य प्रकाश ॥21॥

मात्र तव सहचारिणी प्रवीर,
न स्वामी बनने की हो भूल ।
यदपि मैं बहती हूं स्वछंद,
न तोड़ूं मर्यादा की कूल[2] ॥22॥

कभी भी चलती नहीं प्रतीप[3],
चलूंगी फिर कैसे प्रतिकूल ।
नहीं गति अवरोधन क्षम विश्व,
यत्न रोधन का जनता शूल[4] ॥23॥

विभा का विक्रम से था मेल,
प्रखर राजत्व हुआ समुदात्त ।
दिव्यता पार्थिवता मिल उभय,
कर रही सार्थकता ज्यों प्राप्त ॥24॥

सबलहयकर्षित[5] उत्तमवेग,
चला स्यंदन[6] उड़ता था केतु[7] ।
महीपतिपार्श्वस्था सुन्दरी,
बनीं पुरजन जिज्ञासा हेतु ॥25॥

पुरन्दरता[8] शान्तनु की सिद्ध,
शची[9] सी गंगा रथ आरूढ़ ।
देख विस्मित थे परिजन सभी,
मोद भी रहता कहां निगूढ़[10] ॥26॥

1. कर, हाथ	2. किनारा	3. विपरीत	4. पीड़ा	5. घोड़ा
6. रथ	7. ध्वजा	8. इन्द्रत्व	9. इन्द्र की पत्नी	10. गुप्त

चली फिर उत्सव की श्रृंखला,
वधूवत नगरी थी अभिराम ।
अलंकृत सज्जित सौरभ पूर्ण,
हासयुत पुलकितवपु छविधाम ॥27॥

मोद में बीत गया बहु काल,
पाण्डुता दिव्य देह की देख ।
हर्ष सागर सा लहरा उठा,
प्रकट होगा नव विधि[1] आलेख ॥28॥

समाकुल रहते पौरव नित्य,
प्रतीक्षित रहता शिशु अवतार ।
किलक से गुन्जित होगा सौध[2],
बनेगा घर प्रहर्ष आगार ॥29॥

विविध आभरण[3] वस्त्र क्रीड़नक[4],
प्रथम ही करवाए तैयार ।
अंष मम होने को है उदित,
मुदित होते नृप बारम्बार ॥30॥

नित्य आ कर अन्त:पुर मध्य,
पूछते थे महिषी का क्षेम ।
हुआ था अब नित वर्धन शील
नृपति का सात्विक जाया[5] प्रेम ॥31॥

सूचना पाकर आए दौड़,
पुत्र का देखेंगे शुभ आस्य[6] ।
आज था मानस मत्त मयूर,
कर रहा लीला युत नव लास्य[7] ॥32॥

किन्तु गंगा ले शिशु को चली,
त्वरायुत गति थी परम अवार्य[8] ।
किया अनुगमन नृपति ने शीघ्र,
नहीं उर को था धीरज धार्य ॥33॥

1. ब्रह्मा	2. राजभवन	3. आभूषण	4. खिलौने
5. पत्नी	6. मुख	7. नृत्य	8. न लौटाने योग्य

गई गंगा जलधारा मध्य,
बहाया क्षण में सद्योजात[1] ।
खड़े थे पौरव[2] स्तब्ध अवाक,
स्वप्न सा होता सब प्रतिभात ॥34॥

कौन हो सकती भू पर जननि,
क्रूर इतनी मारे नवजात ।
न नेत्रों पर होता विश्वास,
लगा उर को गहरा आघात ॥35॥

सहा पर सब कुछ रह कर मौन,
वचन से वद्ध भूप असहाय ।
देखते रहे स्व संतति नाश,
प्रकंपित पीड़ित अति निरूपाय ॥36॥

कर रही थी जब यह व्यवहार,
आठवें अंगज[3] के भी साथ ।
हुआ शांतनु को आज असह्य,
रोष से पकड़ा गंगा हाथ ॥37॥

क्रोध से बोले जननी वेष,
धारिणी हो हिंसक तुम कौन ?
बहाती अपने ही नवजात,
विवश धारूं में कब तक मौन ॥38॥

तभी बोली गंगा बस आर्य,
वचन हो गया अंततः भंग ।
सहचरण[4] अवधि हुई प्रसमाप्त,
हमारा छूट रहा अब संग ॥39॥

प्रश्न से असिवत है विच्छिन्न,
बांधती थी हमको जो डोर ।
लौट जाओ पुर को पुरमान्य,
चली मैं भी सागर की ओर ॥40॥

1. नवजात 2. पुरूवंशी नरेश 3. पुत्र 4. पुत्र

विकल हो दौड़े पीछे नृपति,
न जाओ गंगे मुझको छोड़ ।
किन्तु वह तत्क्षण हुई विलुप्त,
धारकर शिशु को भी निज क्रोड़[1] ॥41॥

लग रहा जीवन आयत स्वप्न,
मिली गंगा फिर उपजे पुत्र ।
किए सुरसरि धारार्पित त्वरित,
न गंगा है गतसूनु अमुत्र[2] ॥42॥

गया जीवन देकर बस शून्य,
निरर्थक बीता इतना काल ।
स्मृति श्रृंखला मात्र है शेष,
अरून्तुद[3] कितना मायाजाल ॥43॥

ओढ़कर तमवत् सघन विषाद,
बैठ जाते नृप सुरसरि तीर ।
प्रतीक्षातुर थक जाते नयन,
कभी फिर भर आता था नीर ॥44॥

यंत्रवत करते सारे कार्य,
चलाते शासन नृपति तटस्थ ।
हुई क्रमषः वपु पर भी प्रकट,
विषम वेदना गूढ़ हृदयस्थ ॥45॥

मौन ऊपर से लगते कुरुप[4],
निरन्तर चलते थे चलचित्र ।
प्रजा पालनरत रहते सतत्,
बन गए निज के किन्तु अमित्र[5] ॥46॥

मनुज के मन में ही हो रोग,
महावैद्यता न आती काम ।
गहन आयुर्वेदिक नृप ज्ञान,
हर सका नहीं वेदना वाम[6] ॥47॥

1. गोद	2. परलोक	3. मर्मभेदी
4. कुरू देश का पालक	5. शत्रु	6. कटु , विपरीत

थकित से बैठे तट पर अधिप[1],
देखते सुरसरि को अनिमेष ।
हुए यतिवत् क्षण को ध्यानस्थ,
कर्णगत् वाणी हुई विशेष ॥48॥

व्यथा वर्धन न वृथा नृप करो,
तुम्हें तो हरना है जनताप ।
विगत में रहकर इतने मग्न,
बनाते जीवन क्यों अभिशाप ॥49॥

जगत का हर अणु है गतिमान,
मात्र यह है प्रवाह सातत्य[2] ।
नहीं इस कारण गत्यवरोध,
अचलता हो सकती आदृत्य[3] ॥50॥

धीर हो त्यागो कातर भाव,
भावना के बनते क्यों भृत्य[4] ।
तौलना नर मति से क्या उचित,
आधि[5] दैविक रहस्यमय कृत्य ॥51॥

हो चुका शस्त्र-शास्त्र निष्णात[6],
तुम्हारा अंगज मुद वर्धिष्णु[7] ।
देवगुरू अनुशासित अविजेय,
वचनपर[8] भृगुपति[9] सम रोचिष्णु[10] ॥52॥

शीघ्र ही आऊंगी सापत्य[11],
सौंपने तुम्हें वंशधर प्रेय[12] ।
धर्मध्वजधारी त्यागादर्ष,
प्रतिज्ञा पालक आत्मविधेय ॥53॥

प्रतीक्षित था हर क्षण आगमन,
हुए शांतनु कुछ और अशान्त ।
देख पाऊंगा कब निज तनय,
प्रिया से होगा दीप्त निशान्त[14] ॥54॥

1. राजा	2. निरंतरता	3. आदरणीय	4. सेवक	5. दैवी
6. प्रवीण	7. हर्ष बढ़ाने वाला	8. आज्ञाकारी	9. परशुराम	10. दीप्तिमान
11. पुत्रसहित	12. प्रिय	13. इंद्रिय संयमी	14. घर	

दृष्टिगोचर अगले दिन हुआ,
सरासन लिए तटस्थ किशोर ।
धाम[1] जिसका शिवसूनुसमान[2],
उचित दिनमणि[3] प्राची में भोर ॥55॥

गए सत्वर नृप बालक पास,
बताओ सुत अपना अभिधान ।
तभी प्रकटी गंगा द्युतिमती,
हुआ तत्क्षण नृप को अभिज्ञान ॥56॥

अहा! गंगे क्या यही कुमार,
हमारा चिर अभिलषित अपत्य[4] ।
कहा गंगा ने हां कुरूराज,
तर्कणा[5] भवदीया[6] है सत्य ॥57॥

देवव्रत है इसका अभिधान,
देवगुरू के द्वारा अनुशिष्ट[7] ।
दिव्यमेधा देवोपमूप,
क्यों न हो अंगज ऐसा इष्ट ॥58॥

समर्पित इसको मैं कर रही,
दिया था वचन रखा है मान ।
धरा का था इतना ऋण शेष,
उऋण हूं अब जाती सुरधाम[8] ॥59॥

1. तेज	2. कार्तिकेय	3. सूर्य	4. सन्तान
5. अनुमान	6. आपकी	7. शिक्षित	8. स्वर्ग